

खिताब

वह लौट आई है आज
फिर इसी पिंजरे में
जहां कुछ वर्ष पूर्व फेंक दी गई थी,
कन्यादान करके सौभाग्य पाये थे वे
भार भी हलका हुआ था काफी
उसे उसके 'अपने घर' भेजकर;
इससे पहले उसको खूब पिलाये गये
संस्कारों के घूंट
उस 'अपने घर' के लिये
जैसे चिड़ियाघर भेजने से पहले
जानवर को वहां के अनुरूप ढाला जाता है ;
क्या पहनना चाहिये
कहां जाना चाहिये
किससे बात करनी चाहिये
नजरें नीची रखनी चाहिये
कम और धीरे बोलना चाहिये
सवाल नहीं पूछना चाहिये
आज्ञा माननी चाहिये
सवालिया चेहरा ही लिये रही,
वह पूछना चाहती रही
क्या उसे जीवित रहना चाहिये ?
पर पूछ न पाई
वर्जित है खुद की सोच रखना
लेकिन जवाब हाँ था
हाँ पति परमेश्वर की चाकरी नामक पुण्य के लिये;
उसका मरना अनगिनत सवाल खड़े कर देता है
दोनों वंशों के लिये
उसकी नींव पर ही तो खड़ा होगा
नया वंश
और कंगूरे हंसते रहेंगे उसकी बलि पर;
अच्छी गऊ बिटिया का खिताब पाये
वह 'अपने घर' के खूटे से बांध दी गई
और मजबूरी -रिवाजों की कुंडी लगा दी गई
फिर खटने लगी वह
अच्छी बहू के खिताब के लिये ,
खुद के लिये सोचना उसका
उन लोगों को पसंद नहीं है
और पसंद नहीं है

बजती पायल पहनना
फबते कपड़े पहनना
पढना
लिखना
खिलखिलाना
खुल कर सांस लेना आसमां देखना ;
उनकी पसंद का खयाल रखना
यही उसका परम धर्म है
पसंद है केवल उन्हें
उसके धोये प्रेस किये कपड़े
उसका बनाया खाना
चमचमाता घर
नीची नजरें
कम जरूरतें,
सब कहते हैं
अच्छी बहू पाई है आपने
कितना अच्छा काम करती है !!!!
अपनी मिट्टी की एक कतरा
हवा भी पाती है
कुछ वर्षों में
अनेक षर्तों पर
पिता का निरीह चेहया देखकर
वो भी नहीं चाहती अब तो
उसके जर्जर हुये षरीर को देखकर

मां की वह घुटी घुटी रुलाई सह नहीं पाती
लौट जाती है वहीं
'खुष हूं' का आश्वासन देकर
उसी पिंजरे में
ताउम्र खटने के लिये
बदले में पाती है
'अपने घर' में
दो जून रोही व
अच्छी पत्नि का खिताब ?

.....किरण राजपुरोहित नितिला